DATE 9.12.24
PAGE No 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा')
(लेखक - ~~अक्षयकुमार~~ दीक्षित)
पुस्तक - नवतरंग - 7 भाग - 2

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा' का अगला भाग पढ़ेंगे। यह पाठ हिंदी साहित्य पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-124 पर दिया गया है।

प्यारे बच्चो! अब आप अपनी पुस्तक का पृष्ठ 126 खोलकर रख लें। पिछले भाग में लेखक अपने मित्रों के साथ सिंगापुर घूमने गए। एक सप्ताह तक वे सिंगापुर में रहे और उन्होंने वहाँ के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। जिसका वर्णन उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत में किया है।

सिंगापुर एक बहुत छोटा देश है, छोटा होने के बावजूद भी वह विकसित देश है। वहाँ के नागरिकों ने इसे विकसित देश बनाया है। उन्होंने बताया, "हमारा देश एक छोटा-सा टापू है। हमारे पास पीने का पानी, जंगल, पहाड़, नदी आदि कोई संसाधन नहीं है इसलिए यदि हमें अपने देश की तरक्की करनी है तो जो कुछ हमारे पास है उसी का विकास करें। हमने अपने नागरिकों की शिक्षा द्वारा अपने देश को विकसित कर दिखाया है।"

बच्चो! लेखक ने वहाँ के एक विद्यालय के भ्रमण के दौरान उन्होंने गौर किया कि विद्यालय में लगभग आधे बच्चों की आँखों पर चश्मा लगा हुआ था। लेखक के एक साथी ने वहाँ के शिक्षकों से बच्चों की आँखों पर चढ़े चश्मे के बारे में पूछा तो उन्होंने उनकी बात को मज़ाक में उड़ाने की कोशिश करते हुए कहा — इन बच्चों की आँखें छोटी हैं, इसलिए!

ये उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि उन्हें अपने देश की कमियों को उजागर करना पसंद नहीं है!

सिंगापुर में अधिकतर स्थानों पर लेखक और उनके

Scanned with CamScanner

DATE 9.12.24
PAGE NO 2

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ- 15 'सिंगापुर की यात्रा')

मित्रों ने पाया कि वहां के लोग नियमों का पालन करते हैं। वहाँ सामान्यत: सफ़ाई हर जगह दिखाई देती थी लेकिन कहीं- कहीं इसका उलट भी दिखाई दिया। उदाहरण के लिए, हवाई अड्डे से निकलते ही उन्हें दिखाई दिया फुटपाथ पर गंदगी फैली है और फुटपाथ के किनारे की झाड़ियों में पॉलीथीन के लिफ़ाफ़े जाने कब से अटके हुए हैं। इसी प्रकार मेट्रो रेल के भीतर लिखा था कि कुछ भी खाने-पीने पर 500 डॉलर का जुर्माना है लेकिन वहीं एक सिंगापुरी लड़का 'डिस्पोज़िबल' गिलास में कुछ पीते हुए खड़ा था। वहाँ के बाज़ार में लेखक ने बड़ा-सा बोर्ड देखा जो आगाह कर रहा था कि शॉप लिफ़्टिंग - यानि 'दुकान से सामान चोरी करने से क्या-क्या भुगतना पड़ सकता है। लेखक को पूरे एक सप्ताह सिंगापुर में किसी पुलिस वाले के दर्शन नहीं हुए, जगह-जगह बोर्ड तो दिखाई दिए कि पुलिस से संपर्क करने के लिए 'वहाँ' जा सकते हैं।

यदि आप सिंगापुर घूमने जाना चाहते हैं तो वहाँ जगह-जगह आपको पीले और संतरी रंग की साइकिलें खड़ी मिलेंगी। इन साइकिलों को नागरिक और पर्यटक कोई भी प्रयोग में ले सकता है। इसके लिए आपको अपने फ़ोन में एक 'एप' डाउनलोड करना होता है। इसके बाद आप अपने आस-पास की ऐसी किसी भी साइकिल को खोजकर उसे अपने विशिष्ट कोड से खोल सकते हैं। लेखक के मन में जिज्ञासा उठी कि क्या सिंगापुर में इस तरह यहाँ-वहाँ खड़ी साइकिलों को देखकर किसी चोर-उचक्के का मन ललचाता नहीं होगा? उन्हें लगा कि शायद तकनीक (जी पी एस) ने इस समस्या पर काबू पा लिया होगा। वहाँ उन्होंने एक जगह ऐसी दो साइकिलें भी पड़ी देखी, जो कबाड़ बन चुकी थीं।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 9.12.24
PAGE No 3

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-15 सिंगापुर की यात्रा

होटल में जो व्यक्ति उन लोगों के भोजन लेकर आता था, उसने बताया कि वह 10 साल पहले भारत के हरियाणा राज्य से सिंगापुर आया था और अब माता-पिता के साथ वह यहीं बस गया था। उसके अनुसार पहले सिंगापुर आकर किसी के लिए भी काम के लिए यहाँ बस जाना या यहाँ की नागरिकता लेना आसान था लेकिन अब उतना आसान नहीं रह गया है। लेखक ने अनुमान लगाया कि पहले पहले यहाँ की सरकार को अपने देश के कामकाज को चलाने के लिए लोगों की ज़रूरत थी। लेकिन अब यह छोटी-सी धरती और थोड़े-से संसाधनों वाला यह देश अब और अधिक बाहरी लोगों का बोझ नहीं उठा सकता। इंटरनेट द्वारा यह भी पता चला है कि सिंगापुर समुद्र पर कृत्रिम भूमि का निर्माण करके अपनी आज़ादी के बाद से अपना क्षेत्रफल सैकड़ों वर्गमील बढ़ा चुका है।

बच्चो! इस पाठ को हम यहीं तक पढ़ेंगे। इस पाठ का शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :- सब बच्चे पिछला भेजा काया कार्य और इस कार्य को अच्छी तरह से दो-तीन बार पढ़ेंगे। पाठ बहुत रोचक है। अच्छे से समझ में आ जाएगा। लेखन कार्य भी अति आवश्यक है।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner